अथर्व
IAS एकेडमी इन्दौर

Atharva IAS Academy Indore

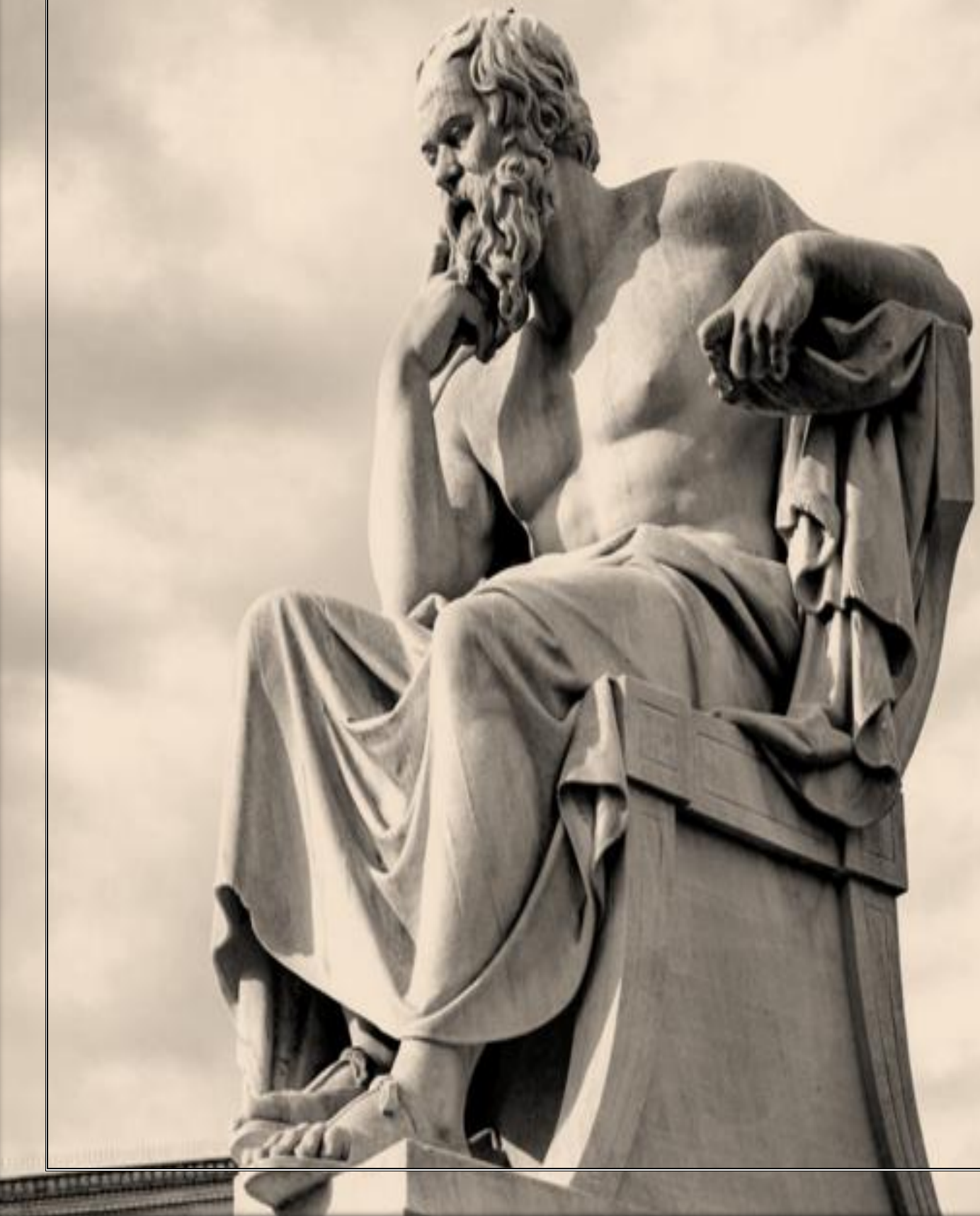

चार्वाक दर्शन

चार्वाक का जड़वाद या भौतिकतावाद अवैदिक दर्शनो में सबसे प्राचीन है।

भारतीय दर्शन में यह एकमात्र जड़वादी या भौतिकतावादी दर्शन है।

'चार्वाक' शब्द की उत्पत्ति सम्बन्धी विभिन्न मत

1. चार्वाक शब्द 'चर्व' धातु से निष्पन्न है। चर्व का अर्थ– चबाना, खाना –पीना आदि चूंकि इस मत में खाना – पीने पर अधिक जोर है इसीलिए इसका नाम चार्वाक है।
2. चारु+वाका, चारु (मधुर, मीठा) वाका् (वचन) होने के कारण ये चार्वाक कहलाए।
3. चार्वाक नामक एक ऋषि के द्वारा इस मत का प्रतिपादन होने के कारण इसका नाम चार्वाक पड़ा।
4. कुछ विद्धानों के अनुसार चार्वाक दर्शन के प्रतिपादन, देवताओं के गुरु बृहस्पति हैं। इसलिए यह दर्शन बार्हस्पत्य –दर्शन के नाम से भी जाना जाता है।

चार्वाक दर्शन का कोई किसी विशिष्ट ग्रंथ नहीं है। दूसरे दर्शनो के ग्रंथो एवं साहित्यों से इस मत का परिचय मिलता है।

ज्ञानमीमांसा या ज्ञान का सिद्वान्त या प्रमाण विज्ञान

- ज्ञानमीमांसा दर्शनशास्त्र की एक प्रमुख शाखा है जिसमे ज्ञान के स्त्रोत, ज्ञान के स्वरुप, ज्ञान के लक्ष्ण, ज्ञान की संभावना, ज्ञान का विकास, सीमा, प्रामाणिकता, ज्ञाता–ज्ञेय संबध इत्यादि की विवेचना की जाती है।

-: Contact Us :-
Mobile :- 09826041759 , 088274 43949
Email :- atharvaiasacademyindore@gmail.com
Website :- https://atharvaiasacademyindore.com
Follow Us On :-

तत्वमीमांसा या तत्व–विज्ञान

- तत्वमीमांसा दर्शनशास्त्र की एक प्रमुख शाखा है जिसमे (1) विश्व के मूल तत्व (Original Stuff) या आदि कारण (First cause) के स्वरुप एवं (2) मूल तत्व की संख्या की विवेचना की जाती है। यहाँ पहला पक्ष जहाँ मूल तत्व की प्रकृति के विषय में है। वहीं दूसरा पक्ष उसके परिमाण या संख्या के विषय में है।

जड़वाद या भौतिकतावाद

- जीवन और जगत के मूल तत्व के रुप में जड़ तत्व या भौतिक तत्व की सत्ता मानने वाला सिद्धान्त जड़वाद कहलाता है।

लोकायत

- चार्वाक मत को लोकायत दर्शन भी कहा जाता है। लोक (संसार) में जनसाधारण में विस्तारित होने या इसी लोक को एकमात्र सत्य मानने के कारण यह लोकयत कहा गया है।

स्वभाववाद

- जड़ तत्वों में निहित स्वभाव से जगत की उत्पत्ति मानने वाला सिद्धान्त स्वभाववाद कहलाता है। चार्वाक इसका सर्मथन करता है।

Atharva Academy

Atharva IAS Academy Indore

ज्ञानमीमांसा या ज्ञान का सिद्धान्त (Theory of Knowledge)

चार्वाक दर्शन में ज्ञानमीमांसा प्रथमिक है। चार्वाक सर्वप्रथम ज्ञान की मीमांसा करते है, और तत्पश्चात् अपने ज्ञानमीमांसीय मान्यताओं के आधार पर तत्वमीमांसा एवं नीतिशास्त्र को स्थापित करते है।

ज्ञानमीमांसा ⟶ तत्वमीमांसा ⟶ नीतिशास्त्र

ज्ञानमीमांसा का एक मुख्य प्रश्न यह है किं हमारे यथार्थ ज्ञान का साधन क्या है? भारतीय दर्शन में यथार्थ ज्ञान (प्रमा) के साधन को प्रमाण कहा गया है। दूसरे शब्दों में, जिस साधन के द्वारा प्रमाता (ज्ञाता) प्रमेय (ज्ञेय) का ज्ञान प्राप्त करता है, उसे प्रमाण कहते है। विभिन्न दर्शनो में प्रमाणों की सख्या के संदर्भ में मतभेद है। चार्वाक विभिन्न प्रमाणो में से केवल प्रत्यक्ष को प्रमाण के रुप में स्वीकार करता है तथा अन्य प्रमाणों (अनुमान, शब्द आदि) की प्रामाणिकता का खंडन करता है।

ज्ञानमीमांसा की दृष्टि से चार्वाक प्रत्यक्षवादी है अर्थात चार्वाक मत में प्रत्यक्ष ही एकमात्र प्रमाण है। (प्रत्यक्षमेव प्रमाणम्) यथार्थ ज्ञान प्राप्ति के साधन या स्त्रोत के रुप में चार्वाक केवल प्रत्यक्ष को स्वीकार करते है। जो ज्ञान इन्द्रिय और विषय (अर्थ) के सन्निकर्ष से उत्पन्न होता है उसे प्रत्यक्ष कहा जाता है। चूँकि ज्ञानेन्द्रियाँ पाँच है। इसलिए यहाँ पंचविध इन्द्रिय प्रत्यक्ष स्वीकार किया गया है।

चार्वाक द्वारा प्रत्यक्ष को ही एकमात्र प्रमाण मानने का कारण इस प्रमाण में विधमान विश्वसनीयता, अभ्रान्तता एवं निश्चयात्मकता है जो प्रत्यक्षेत्तर (प्रत्यक्ष से भिन्न) प्रमाणों में सम्भव नही है। यही कारण है कि चार्वाक अनुमान, शब्द आदि अन्य प्रामाणो की प्रामाणिकता का खण्डन करते है। अन्य प्रमाणों के खण्डन के लिये दिये गये तर्क ही प्रत्यक्ष को एकमात्र प्रमाण सिद्ध करने के आधार बनते है।

Atharva Academy

प्रत्यक्ष विचार

प्रत्यक्ष (Perception) का शाब्दिक अर्थ है–जो आंखो के सामने हो (प्रति+अक्ष)। परन्तु चार्वाक मतानुसार ज्ञानेन्द्रियों (आंख, कान, नाक, जीभ और त्वचा) से प्राप्त ज्ञान प्रत्यक्ष है। जब इन ज्ञानेन्द्रियों का पदार्थो के साथ सन्निकर्ष या संयोग होता है तब प्रत्यक्ष ज्ञान होता है। (इन्द्रियार्थ सन्निकर्षजन्यं ज्ञानं प्रत्यक्षम्)। स्पष्ट है कि प्रत्यक्ष ज्ञान की प्रक्रिया के लिये तीन बातो का होना आवश्यक है–

(1) इन्द्रिय (Sense Organ) (2) पदार्थ (Object) (3) सन्निकर्ष (Contact)

यहाँ उल्लेखनीय है कि चार्वाक केवल लौकिक प्रत्यक्ष को ही प्रत्यक्ष के रुप में स्वीकार करता है। वे नैयायिकों द्वारा स्वीकृत अलौकिक प्रत्यक्ष को स्वीकार नही करते।

चार्वाक का ज्ञानमीमांसीय विचार अन्य भारतीय दार्शनिकों से भिन्न है, क्योंकि प्रत्यक्ष के साथ साथ अनुमान, शब्द, उपमान आदि विभिन्न प्रमाणों का विचार भारतीय प्रमाणं विचार का एक प्रधान अंग है। जैसे– बौद्ध एवं वैशेषिक दर्शन प्रत्यक्ष और अनुमान को; जैन और सांख्य में प्रत्यक्ष, अनुमान और शब्द को; न्याय दर्शन ने प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द, और उपनाम को माना है।

चूँकि चार्वाक की दृष्टि में प्रत्यक्ष ही एकमात्र प्रमाणं है, फलस्वरुप वे अपने मत के प्रतिपादन के लिए अनुमान तथा शब्द जैसे प्रमाणो का खंडन करते है जिसे निम्नवत् प्रस्तुत किया जा सकता है।

अनुमान प्रमाण का खंडन (Refutation of Inference)

चार्वाक अनुमान को संदेहात्मक मानते है। अनुमान दो शब्दों के योग से बना है– अनु और मान। यहां 'अनु ' का अर्थ पश्चात् और 'मान' का अर्थ ज्ञान है। अर्थात् अनुमान का शाब्दिक अर्थ पश्चात् ज्ञान से है। अनुमान के अंतर्गत दृष्ट हेतु से अदृष्ट साध्य की सिद्धि होती है। जैसे पर्वत पर दृष्ट धूम के ज्ञान से पर्वत पर अदृष्ट अग्नि का ज्ञान होना अनुमान है। अनुमान के लिए दों बातें आवश्यक है। पहला हेतु का पक्ष में होना और दूसरा हेतु और साध्य में व्याप्ति–संबध होना। व्याप्ति–ज्ञान अनुमान का करण या साधन माना जाता है, क्योंकि अनुमान तर्कतः इसी पर निर्भर करता है। व्याप्ति अनुमान का प्राण है। व्याप्ति का शाब्दिक अर्थ –

विशेष संबंध है। व्याप्ति हेतु एवं साध्य के मध्य का अनौपाधिक, नियत साहचर्य, सार्वभौम तथा अव्यभिचारी संबंध है, जैसे जहाँ–जहाँ धूम है वहाँ–वहाँ अग्नि अवश्य है।

चावार्क मतानुसार अनुमान को प्रमाण तभी माना जा सकता है, जब व्याप्ति संदेहरहित हो परंतु व्याप्ति संबंध की निश्चयात्मक एवं असंदिग्ध रुप से सिद्धि किसी भी प्रकार से नही की जा सकती है। स्पष्ट है कि चार्वाक अनुमान–खण्डन के क्रम मे व्याप्ति का खण्डन करते है।

1. चावार्क मतानुसार व्याप्ति संबंध की स्थापना प्रत्यक्ष से नही की जा सकती , प्रत्यक्ष का क्षेत्र सीमीत है। हम धुएँ से युक्त पर्वत को देखकर वहाँ अग्नि की निश्चयात्मक रुप से स्थापना तभी कर सकते है , जब सर्वत , सदैव धुएँ के साथ अग्नि विघमान हो। परन्तु भूत और भविष्य की बाते तो दूर, वर्तमान काल में भी संसार के भिन्न भिन्न भागों मे धूम और अग्नि के सभी संबंधो का प्रत्यक्ष नही कर सकते । ऐसी स्थिति मे धूम (हेतू) और अग्नि (साध्य) के कुछ संबधो को देखकर उनके मध्य सार्वभौम संबंध (व्याप्ति) की निश्चयात्मक रुप से स्थापना नहीं की जा सकती। यदि हेतू एवं साध्य के कुछ संबंधो को देखकर उनके मध्य सार्वभौम संबंध होने का निष्कर्ष निकालने का प्रयास किया गया तो फिर वहाँ अवैध सामान्यीकरण का दोष उत्पन्न हो जाता है।
   न्याय मतानुसार सामान्य लक्षण प्रत्यक्ष नामक अलौकिक प्रत्यक्ष से व्याप्ति का ज्ञान संभव है चार्वाक इसे स्वीकार नही करते। इनके अनुसार सत्ता केवल विशेष की है। सामान्य की नही। प्रत्यक्ष से केवल विशेष का ही ज्ञान होता है, सामान्य का नही। यहाँ अलौकिक प्रत्यक्ष की स्थिति को स्वीकार नहीं किया गया है।
2. व्याप्ति की सिद्धि अनुमान से भी नही की जा सकती। यदि ऐसा किया गया तो फिर दो प्रकार के दोष उत्पन्न होते है।
   1. चक्रक दोष
   2. अनवस्था दोष

Atharva Academy

-: Contact Us :-
Mobile :- 09826041759 , 088274 43949
Email :- atharvaiasacademyindore@gmail.com
Website :- https://atharvaiasacademyindore.com
Follow Us On :-

शब्द प्रमाण का खंडन

न्याय मीमांसा आदि दर्शनों मे शब्द को प्रमाण के रूप में स्वीकार किया गया है। चार्वाक शब्द की प्रामाणिकता का भी खण्डन करते है। शब्द–प्रमाण को दो वर्गो में वर्गीकृत किया जाता है– 1. लौकिक 2. वैदिक।

लौकिक संदर्भ मे केवल विश्वसनीय व्यक्ति के वचन को ही शब्द –प्रमाण के रूप मे स्वीकार किया जाता है। चार्वाक के अनुसार यह शब्द–प्रमाण स्वंय अनुसार पर आधारित है। इसे हम एक युक्ति के माध्यम से देख सकते हैं।

सभी विश्वासयोग्य व्यक्तियो के वचन मान्य है।

यह विश्वासयोग्य व्यक्ति का वचन है।

अतः यह वचन मान्य है।

चार्वाक मतानुसार 'कोई व्यक्ति आप्त पुरूष है' या ' आप्त पुरूष का कथन विश्वास करने योग्य है 'यह अनुमान पर आधारित है। चूंकि अनुमान स्वयं प्रमाण नही है, अतः अनुमान पर आधारित शब्द भी प्रमाण नही है।

चार्वाक मतानुसार हम प्रत्यक्ष के आधार पर कभी भी विश्वसनीय व्यक्ति की सत्ता को स्वीकार नहीं कर सकते। यहाँ चार्वाक यह भी कहते हैं कि यदि शब्दों के माध्यम से किसी ऐसी वस्तु का ज्ञान प्राप्त होता है जो प्रत्यक्षगम्य हो तो फिर वह प्रत्यक्ष की सीमा में आ जाता है और यदि शब्द से किसी ऐसी वस्तु का ज्ञान प्राप्त होता है जो प्रत्यक्षगम्य हो तो फिर वह प्रत्यक्ष की सीमा में आ जाता है और यदि शब्द से किसी ऐसी वस्तु का ज्ञान प्राप्त होता है जो प्रत्यक्ष से परे है तो फिर उसे स्वीकार नहीं किया जा सकता।

Atharva Academy

मूल्यांकन

चार्वाक के प्रत्यक्षवादी ज्ञानमीमांसा में गंभीर विसंगतियाँ विघमान है। वे अनुमान, शब्द और उपमान के खंडन में तर्कतः सफल नही हो पाए है । फिर भी इनके ज्ञानमीमांसा विचारों की अपनी महत्ता है। इनके ज्ञानमीमांसा विचारीं ने भारतीय विचारकों के समक्ष अनेक समस्याएँ पैदा कि जिनका समाधान करने के लिए वे विवश हुए। फलस्वरुप भारतीय दर्शन पुष्ट, समद्ध और विकसित हुआ। पुनः चार्वाक विचारको ने भारतीय दर्शन को रुढिवादी और अंधविश्वासी होने से बचाया।

चार्वाक ने प्रत्यक्ष प्रमाण पर जो बल दिया, उसका प्रभाव के वस्तुवादी दर्शनों पर पर्याप्त रुप से पड़ा है और उन्होने चार्वाक के प्रत्यक्षवादी या अनुभववाद को अपने वस्तुवाद में सम्मिलित करने का प्रयास किया है।

चार्वाक का ज्ञान मीमांसीय विचार प्राचीन भारतीय चिंतन के बहुआयामी दृष्टिकोण एवं वैचारिक स्वतंत्रता को इंगित या प्रदर्शित करता है।

Atharva Academy

चार्वाक की तत्वमीमांसा (Metaphysics)

अतीन्द्रिय सत्ताओं का खण्डन (Rejection of transcendent Entities

चार्वाक की भौतिकतावादी तत्वमीमांसा उनके प्रत्यक्षवादी ज्ञानमीमांसा पर आधारित है। चूंकि चार्वाक प्रत्यक्ष को एकमात्र प्रमाण के रुप में स्वीकार करते है इसलिए विश्व के मूल में उन्ही तत्वों को स्वीकार करते है जिनका प्रत्यक्ष ज्ञान होता है। प्रत्यक्ष द्वारा केवल जड़ द्रव्यो का ज्ञान हो सकता है। इसी कारण चार्वाक ईश्वर, आत्मा, स्वर्ग–नरक, पूर्वजन्म, पुनर्जन्म, आध्यात्मिक लक्ष्य मोक्ष, अदृष्ट आदि अतीन्द्रिय विषयों का खंडन करते है। जीवन और जगत् के मूल तत्व के रुप में जड़ तत्व की सत्ता को स्वीकार करने के कारण चार्वाक जड़वाद या भौतिकवाद का प्रतिपादन करते है। चूंकि जड़तत्व चार प्रकार के होते है। इसलिए इनका तत्वमीमांसीय सिद्धान्त बहुतत्ववादी जड़वाद कहलाता है।

तत्वमीमांसा में मुख्यतः तीन विषयों की विवेचना की जाती है। 1. जगत 2. आत्मा और 3. ईश्वर। चार्वाक तत्वमीमांसा में इनका विशिष्ट रुप से विवेचन किया गया है।

जगत–विचार

अधिकांश भारतीय विचारकों के मतानुसार जगत के मूल में पांच तत्व है।

(पंचमहाभूत)

1. आकाश
2. वायु
3. अग्नि
4. जल
5. पृथ्वी

किंतु चार्वाक आकाश के अस्तित्व को नही मानते क्योकि इसका प्रत्यक्ष नही है। अतः उनके अनुसार जगत शेष चार प्रकार के भूतों (तत्वों) से ही निर्मित है। इन चार तत्वों के विविध अनुपातो में सम्मिश्रण होना से बाह्य जगत, भौतिक शरीर, इन्द्रियाँ आदि उत्पन्न होती है। इन जड तत्वो से न केवल निर्जीव पदार्थो की उत्पत्ति होती है,

बल्कि सजीव द्रव्य भी इसी से उत्पन्न हुए है। प्राणियों का जन्म जड़तत्वों से होता है और मृत्यु के पश्चात वे जड़तत्वों में ही मिल जाते है।

चार्वाक के अनुसार जिस प्रकार आग का स्वभाव गर्म होना, जल का स्वभाव ठंडा होना, उसी प्रकार चार भूतो का स्वभाव विश्व का निर्माण करना है। चार्वाक के इस मत को स्वभाववाद कहा जाता है। चार्वाक के अनुसार यह विश्व प्रयोजनविहीन है। सृष्टि की रचना के पीछे कोई प्रयोजन या उद्देश्य नही है। यह मशीन की भाँति है। यही कारण है कि चार्वाक मत को यंत्रवाद कहा जाता है। पुनः चार्वाक विश्व की व्याख्या वस्तुवादी दृष्टिकोण से करता है। उनके अनुसार ज्ञेय या वस्तुओं का अस्तित्व ज्ञाता से स्वतंत्र है।

ईश्वर–विचार

चार्वाक ईश्वर की सत्ता का खंडन करते है क्योकि यह प्रत्यक्ष से प्रमाणित नही है। चार्वाक अनुसार या शब्द के आधार पर भी ईश्वर के अस्तित्व सिद्धि के प्रयासो का खंडन करते है क्योकि अनुमान और शब्द प्रमाण नही है।

सामान्यतः संसार के निमित्त कारण के रुप में ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार किया जाता है। उदाहरणस्वरुप न्याय मतानुसार संसार एक कार्य है और ईश्वर उसका निमित्त कारण है। ईश्वर जगत का सृष्टा है और जगत ईश्वर की सृष्टि है। इसके विपरीत चार्वाक का कहना है कि ईश्वर जगत का रचयिता या कर्ता नही है। चार्वाक मतानुसार जड़ तत्व अपने–अपने स्वभाव के अनुसार ही संयुक्त होते है और उनके स्वतः सम्मिश्रण से संसार की उत्पत्ति होती है, इसलिए चार्वाक मत स्वभाववाद कहलाता है। पुनः चार्वाक मत के अनुसार संसार की उत्पत्ति किसी प्रयोजन साधन के लिए नही हुई है। अतः प्रयोजनकर्ता के रुप में ईश्वर को मानने का कोई औचित्य नही है। संसार तो जड़ तत्वों के आकस्मिक संयोग का परिणाम है। इसलिए चार्वाक मत को यदृच्छावाद भी कहा जाता है।

चार्वाक का भौतिकवाद नैतिक क्षेत्र में सुखवाद की ओर ले जाता है। जब ईश्वर, आत्मा, परलोक, पुनर्जन्म, कर्म सिद्धांत सभी काल्पनिक है तब फिर संसार और वर्तमान जीवन ही व्यक्ति के लिए शेष बचता है। धर्म और मोक्ष चार्वाक को मान्य नही है। काम ही एकमात्र पुरुषार्थ है और अर्थ काम प्राप्ति का साधन। अतः व्यक्ति को अर्थ और काम के लिए ही प्रयत्न करना चाहिए।

-: Contact Us :-
Mobile :- 09826041759 , 088274 43949
Email :- atharvaiasacademyindore@gmail.com
Website :- https://atharvaiasacademyindore.com
Follow Us On :-

स्वर्ग–नरक

स्वर्ग–नरक वह पारलौकिक स्थान है जहाँ आत्मा अपने द्वारा किये गये कर्मो का फल प्राप्त करती है। चार्वाक मतानुसार यदि स्वर्ग–नरक वास्तविक सत्ताएँ है तो फिर उनका प्रत्यक्ष होना चाहिए। परन्तु ऐसा नही है। अतः इनकी सत्ता मे विश्वास करने का आधार नही है।

स्वर्ग–नरक की अवधारणा नित्यात्मा, पुनजन्म एवं कर्मफल मे विश्वास पर आधारित है। चार्वाक इसका खंडन करता है। परिणामस्वरुप वह स्वर्ग–नरक के भी अस्तित्व को नकारता है। चार्वाक मतानुसार जो इस लोक में सुखी है उसके लिए यही विश्व स्वर्ग है। पुनः जो इस लोक में दुखी है, उसके लिए यह विश्व नरक है। इसलिए कहा गया है कि ''सुखमेव स्वर्गम्, दुखमेव नरकं''।

पुनर्जन्म : पुनर्जन्म का शाब्दिक अर्थ है आत्मा का पुनः–पुनः जन्म करना। यहाँ पुनर्जन्म का आधार मनुष्य द्वारा किया गया कर्म है।

भारतीय दर्शन मे प्रायः तीन प्रकार के कर्मो का उल्लेख है– 1. प्रारब्ध 2. संचित 3.संचयीमान

प्रारब्ध कर्म ऐसे कर्म हैं जो अतीत जीवन में किए गये थे और जिनका फल वर्तमान जीवन में मिलना प्रारंभ हो गया है। संचित कर्म अतीत जीवन में किया गया वह कर्म है जिसका फल अभी जीवन में मिलना प्रारंभ नही हुआ है, जबकि संचयीमान कर्म वर्तमान जन्म में किया जाने वाला कर्म है जिसका फल भविष्य में मिलेगा।

चार्वाक उपरोक्त अवधारणा का खंडन करते है। इसके अनुसार कर्म–फल का संचय नही होता। हम जैसा कर्म करते है, उसका फल इसी जीवन में तत्क्षण या कुछ देर से प्राप्त हो जाता है। अतः कर्म–नियम की व्याख्या हेतु पुनर्जन्म को मानना आवश्यक नही है।

चार्वाक मतानुसार यदि पुनर्जन्म होता तो फिर तथाकथित आत्मा जीवन को अतीत जीवन के अनुभवों का भी ज्ञान होता, परन्तु ऐसा नही होता। मृत्यु से शरीर के साथ साथ आत्मा का भी विनाश हो जाता है। शरीर के भस्म होने के बाद आत्मा को नही माना जा सकता। चार्वाक यहाँ कहते है– '' भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुत्तः ''।

-: Contact Us :-
Mobile :- 09826041759 , 088274 43949
Email :- atharvaiasacademyindore@gmail.com
Website :- https://atharvaiasacademyindore.com
Follow Us On :-

Atharva Academy